क्रियात्मक अनुसन्धान : वर्तमान शिक्षा का भविष्य

डॉ0 अनिल कुमार पाण्डेय
एसोशिएट प्रोफेसर (शिक्षा शास्त्र विभाग)
बी0एस0एन0वी0पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

शोध–सार

राष्ट्रीय संकल्पों, व्यक्ति की आवश्यकताओं एवं मानव के मनोदैहिक पक्षों को ध्यान में रखकर बनाए गए शैक्षिक पाठ्यक्रमों एवं उसके क्रियान्ववयन में शिक्षण सम्बन्धी उत्पन्न धरातलीय विसंगतियों के समाधान हेतु शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों द्वारा किए गए ऐसे सीमित अध्ययन जो अध्यापन कौशल में गुणात्मक परिवर्तन करते हुए विषय को रुचिकर और प्रभावी बना दे; इन्ही संकल्पों की सिद्धि हेतु किए गए अध्ययन क्रियात्मक अनुसंधान के रूप में जाने जाते हैं। क्रियात्मक अनुसंधान किसी एक उद्देश्य को लेकर किया गया संक्षिप्त स्थानीय अध्ययन है, जिससे शिक्षक, प्रशासक एवं अन्य हितधारी क्रियान्ववयनकर्ता अपने में गुणात्मक सुधार लाते हुए यन्त्रवत् संचालित विद्यालयों के वातावरण में आमूल–चूल परिवर्तन करते हुए आकर्षक, प्रभावशील एवं विद्यार्थी मनोनुकूल बनाने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान नित–नूतन बदलते हुए परिवेश में शैक्षिक विषयों के स्थानान्तरण में प्रबल सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए समाधानात्मक संक्रिया का मार्ग प्रस्तुत कर निर्धारित संकल्पों की सिद्धि में बाधक प्रत्ययों की नकारात्मकता से निजात दिला पाने वाले भविष्योंन्मुख अध्ययन होगें, जो प्रकारान्तर में उत्पन्न बाधाओं का उद्भव स्थल पर ही समाधान प्रस्तुत करने में वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द *–क्रियान्ववयन, पाठ्यक्रम, सुरुचिपूर्ण, यान्त्रिक, जड़वत्, शैक्षिक प्रशासक, समाधानात्मक शिक्षण एवं शिक्षार्थी*

मानव विकास के क्रम में अनादि से ही निरीक्षण, अनुभूति, परीक्षण से उत्पन्न अवबोध को आने वाली पीढ़ियों में उत्साह एवं संरक्षण की चाह में स्थानान्तरण की आकांक्षा रही है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में सम्पन्न करता रहा है; यही अनुभवजनित अवबोध के स्थानान्तरित करने की प्रक्रिया शिक्षा का प्रारम्भिक अनौपचारिक स्वरूप रहा है। धीरे–धीरे उक्त अनुभवों के चिन्तन की विशिष्ट क्षमता ने व्यक्तियों के मध्य गुणधर्म के आधार पर श्रेष्ठताजनित भेद उत्पन्न करना एवं उस अनुभवजनित ज्ञान की सामाजिक स्वीकार्यता ने व्यक्तियों की वैयक्तिक श्रेष्ठता के आधार पर विशिष्टीकरण को स्वीकार करते हुए शनै–शनै शिक्षक के रूप में मान्यता प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि इस विशिष्ट क्षमता की स्वीकृत तात्कालिक समाज में समूह विशेष अथवा एक अत्यल्प भौगोलिक परिक्षेत्र में ही हुआ करता था। कार्यानुसार विशिष्टीकरण की यह स्वीकृति समय सापेक्ष धीरे–धीरे विस्तार प्राप्त करती गयी और उस विशिष्ट अनुभवों को सुरक्षित रखने की सामाजिक आकांक्षा ने समूह के अन्य लोगों द्वारा उसे जानने समझने के प्रयास में उस व्यक्ति विशेष के साथ रहकर जानने समझने हेतु प्रयास के आचरण को प्रारम्भिक गुरुकुल का औपचारिक प्रारम्भ माना जा सकता है जिसमें अनुभव सिद्ध ज्ञान को व्यक्ति धीरे–धीरे अन्य को स्थानान्तरित करने के लिए क्रियात्मक अनुभूति जनित प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान कराता था। यहीं से कर्म विशेष का गुणानुरूप विशिष्टीकरण भी प्रारम्भ होने लगा जो कालान्तर में कार्य के आधार पर श्रम व कुशलता आधारित व्यवसाय एवं जातियों के उद्भव का कारण भी बना।

व्यक्ति अपने मूल प्रवृत्तिवश नैसर्गिक जीवन के अर्जित समस्त भौतिक सम्पत्तियों को तो पुत्रों एवं परिवार के अन्य सदस्यों को प्रदान

करता ही था परन्तु बुद्धिजनित योग्यता, कौशल एवं अन्य विशिष्टताओं को भी अपने आने वाली पीढ़ियों में प्रतिस्थापित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। उपयुक्त स्थिति के अनुकूल न होने की दशा में वह अपनी कुशलता एवं ज्ञान को अन्य को भी स्थानान्तरित करता था, जिसके बदले ज्ञान प्राप्त करने वाला शिक्षार्थी सेवा के रूप में कृतज्ञता ज्ञापित करता रहा। धीरे–धीरे यही विशिष्टीकरण की क्रिया व्यवसाय आधारित गुरुकुल बनते हुए अपनी विशिष्ट पहचान प्राप्त करने लगे। गुरु जितना अधिक सक्षम होता था उसकी ख्याति एवं सीखने वालों की संख्या उसी के सापेक्ष बढ़ती गयी तद्नुसार गुरुकुल की प्रतिष्ठा एवं आकर्षण भी बढ़ता गया। प्राचीन भारत में यातायात के समुचित साधनों की सुलभता न होने के बाद भी भारतीय गुरुकुलों में वर्तमान चीन, ईरान, इराक, मिस्र जैसे सुदूर प्रान्तों के विद्यार्थियों का तक्षशिला, विक्रमशीला एवं बौद्ध कालीन नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों में आकर अध्ययन करना इस विशिष्टीकृत ज्ञान के अध्ययन एवं अन्य जगहों पर इस प्रकार के संस्थानों की अनुपलब्धता का ही प्रमाण है।

प्रस्तुत तथ्यों से स्पष्ट हो रहा है कि औपचारिक शिक्षा प्रारम्भिक स्थिति में गुणात्मकता के आधार पर परिस्थिति जन्य घटनाओं की उपज थी, जो कालक्रम में बढ़ती हुई आवश्यकता एवं जनसंख्या के सन्दर्भ में क्रमशः व्यापक होती गयी। व्यापकता के सन्दर्भ में जनशिक्षा से प्रारम्भ हुई यह स्वाभाविक व्यवस्था पुनः एक बार औपचारिक शिक्षा का स्वरूप प्राप्त करते ही गुणवत्ता व कुशलतापरक शिक्षण व्यवस्था अपने प्रादुर्भाव की स्वाभाविक प्रवृत्ति से विलग होकर विशिष्टता के गुण धर्म के कारण अभिजात्य एवं सभ्य वर्ग की शिक्षा बनने की आकांक्षा में नेपथ्य में चली गयी और कला, साहित्य, ललित कला, इतिहास, स्थापत्य कला जैसे विषय ही शिक्षा के केन्द्रीय बिन्दु बन गए। बढ़ती हुई जनसंख्या, उपभोग की प्रकृति एवं आवश्यकताओं ने इस शिक्षा की यात्रा का एकबार पुनः कलेवर परिवर्तित करते हुए इन आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति का साधन एवं माध्यम बनने के लिए विशिष्टीकरण की ओर मुड़ गयी है। इन्हीं दशाओं के कारण ही हम शिक्षा को सतत चलने वाली प्रक्रिया के रूप में सहमति एवं मान्यता प्रदान करते है। वर्तमान में शिक्षा की व्यापकता अपनी रोजगारपरक प्रकृति के सन्दर्भों में विशिष्टता के परिक्षेत्र की व्यापकता एवं सततता के रूप में स्वीकार किया जाता है। इन विशिष्ट अध्ययन के लिए विशिष्ट ज्ञान के शिक्षक एवं संस्थानों की आवश्यकतानुरूप महसूस करते हुए प्रत्येक राष्ट्र निर्माण, प्रचार–प्रसार एवं क्रियान्यवयन व सम्पादन हेतु अध्ययन–अध्यापन करने लगे। चूँकि विशिष्ट ज्ञान के सन्दर्भ में शोधार्थी ही उस विषय के विशेषज्ञ होते हैं जिन्हें उक्त विषय के ज्ञान की विशेषज्ञता प्राप्त होती है परन्तु उनमें अपने अर्जित ज्ञान, अनुभव एवं कुशलता के स्थानान्तरण की शिक्षण कुशलता नहीं होती है। ऐसी स्थिति में तत्सम्बन्धी संस्थाओं को शिक्षा, शिक्षक, प्रशिक्षक एवं प्रशासक से जुड़े हुए अपेक्षया उक्त सक्षमता से अनभिज्ञ लोगों को शिक्षण सहयोग में लेना पड़ता है। यही वह विशिष्ट बिन्दु है जहां पर विशिष्ट ज्ञान व कुशलता के स्थानान्तरण हेतु शिक्षकों को विषयगत भेद के कारण क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता एवं प्रयोग करते हुए इस नवीन प्रविधि का आविर्भाव करना था। इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों, प्रशासकों एवं नीति–नियन्ताओं द्वारा अपने निर्णयों एवं कार्यो में गुणात्मक सुधार एवं उन्नयन हेतु किए जाने वाले प्रयोगों से सम्बन्धित अनुसंधान बन गया।

अनुसंधान का प्रस्तुत प्रकार शिक्षक, शिक्षार्थी के मध्य होने वाली संक्रिया में उत्पन्न विसंगतियों के लिए किया गया अध्ययन है, जिससे संकल्पित लक्ष्यों की सिद्धि में बाधक कारक का संज्ञान प्राप्त हो सके एवं तद्नुरूप समाधान हेतु उचित रीतियों, नीतियों, संकल्पनाओं का निर्माण करते हुए बाधक तत्वों को समाप्त अथवा न्यूनतम करते हुए संकल्पित लक्ष्य को समय सापेक्ष योजनानुरूप सार्थक किया जा सके। शिक्षक पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न संसाधनों का

प्रयोग करते हुए विषय वस्तु का संप्रेषण एवं स्थानान्तरण करने की पाठ्य योजना निर्मित व नियोजित कर विद्यार्थी तक पहुँचने का कार्य करने वाला प्रमुख शिक्षा घटक है तथा यही शिक्षा का मूल कार्य भी है; विशेषकर विद्यालयी स्तर पर। यदि उक्त योजनानुरूप कार्य में किसी भी कारण से सम्पादन अथवा किसी भी अन्य पक्ष में परिणामोन्मुख न्यूनता, बाधा, विसंगति रह जाती है जिससे निर्धारित परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहें हैं तो शिक्षक प्रयासों की पुनरावृत्ति करते हुए न्यूनता के विशिष्ट बिन्दु का अवलोकन, निरीक्षण, परीक्षण करते हुए उसके उद्‌भव स्थान पर ही कारण का समन करने का प्रयास करता है, परन्तु प्रयासों के पुनरावृत्ति एवं संशोधित पुनरावृत्ति के पश्चात भी यदि सार्थक मनोनुकूल अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते है तो उसके निदान व समाधान हेतु चिन्तन, मनन के पश्चात अध्ययन व उपचार हेतु क्रियात्मक अनुसंधान का मानकोनुरूप योजना प्रारूपित कर वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य हो जाता है; जिससे उत्पन्न समस्या, न्यूनता एवं दोषों के कारण निर्धारित अपेक्षित संकल्प परिणाम से दूर न रह जाए।

क्रियात्मक अनुसंधान अन्य अनुसंधान से अपने विशिष्ट लक्ष्यों के कारण अलग हो जाता है। इसमें शोधार्थी का अध्ययन परिक्षेत्र शिक्षक, शिक्षण, प्रशिक्षण के क्रियान्यवयन से जुड़े हुए शासक–प्रशासक अथवा विद्यार्थी होता है। अन्य अनुसंधान की तुलना में इसका अध्ययन सीमित एवं स्थानीय भी होता है। इसके अतिरिक्त इस अनुसंधान का सर्वाधिक प्रबल पक्ष इसका सैद्धान्तिक के स्थान पर व्यावहारिक एवं क्रियात्मक पक्ष का होना होता है।इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रियात्मक अनुसंधान हेतु अग्रांकित स्थितियां, परिक्षेत्र अथवा शर्तें होती है –

- क्रियात्मक अनुसंधान का अध्ययन विषय किसी विद्यालय विशेष अथवा उसकी एक कक्षा, एक शिक्षक या एक विषय से सम्बन्धित समस्या के समाधान के लिए किया गया अध्ययन हो सकता है।
- क्रियात्मक अनुसंधान का अध्ययन परिक्षेत्र कोई एक विद्यालय, विद्यालयों का एक समूह जो विशिष्ट परिक्षेत्र में अवस्थित है अथवा एक विशिष्ट समूह के विद्यार्थियों के लिए बनाये गए हों; होता है। अर्थात क्रियात्मक अनुसंधान के अध्ययन का परिक्षेत्र अन्य अध्ययन की तुलना में स्थानीय एवं समस्याओं के सन्दर्भ में विशिष्ट होता है। इसके विशिष्टता के कारण स्थानीय, नृजातीय, भौगोलिक अथवा व्यवसाय या समूह विशेष के कारणों से प्रभावित होकर उत्पन्न हुए हो सकते हैं।
- क्रियात्मक अनुसंधान स्थानीय स्तर पर उत्पन्न शिक्षण विधि, अनुशासात्मक समस्या जिसका कारण विद्यार्थी, स्थानीय परिस्थिति अथवा प्रशासन कुछ भी हो सकता है जो शिक्षा के लक्ष्य, विधि जैसे किसी भी कारण से उत्पन्न हुआ, हो सकता है।यथा – उत्तराखण्ड के प्राथमिक विद्यालय में उपस्थिति को बढ़ाने के लिए विद्यालय स्तर पर अभिभावकों से सम्बन्ध स्थापित कर पाल्य के प्रगति का नित्य प्रति सूचना का आदान–प्रदान शिक्षकों द्वारा अपनाने से छात्रों की उपस्थिति में व्यापक सुधार का पाया जाना। इसी प्रकार एक अन्य क्रियात्मक अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम के अनुरूपराजस्थान के उच्च माध्यमिक विद्यालय में कन्याओं के विद्यालय छोड़ने की दर में विद्यालय द्वारा सुरक्षा सम्बन्धी जिम्मेदारी लेने के भाव ने अभिभावकों को कन्याओं को पढ़ाई न छोड़ने के सन्दर्भ में सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा गया जो शिक्षक के क्रियात्मक अनुसंधान मे प्राप्त परिणामों के कारण किए गए समाधानात्मक प्रयास द्वारा सम्भव हो सका।
- क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा निर्धारित अध्ययन विषय को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है परन्तु इसके द्वारा अध्ययन–अध्यापन विधि, सहायक उपकरणों, प्रशासनिक अभिक्षमताओं में परिवर्तन अथवा शिक्षा व शिक्षण के अन्य संसाधनों में अध्ययन के परिणामानुसार

परिवर्तन, परिमार्जन सुनिश्चित किया जा सकता है। शैक्षिक संकल्प पाठ्यक्रम, शिक्षा नीति, उसके क्रियान्यवयन से जुड़े नीति का निर्धारण राष्ट्र निर्माताओं द्वारा व्यापक शोध अध्ययन के क्रम में निर्धारित विषय द्वारा सुनिश्चित होता है। क्रियान्यवयन में राष्ट्रीय योजनानुरूप प्रशासित करने पर उत्पन्न स्थानीय, वैयक्तिक या समूहगत बाधा के निराकरणहेतु शिक्षकों या प्रशासकों द्वारा अपनाया जाने वाला अध्ययन ही क्रियात्मक अध्ययन का लक्ष्य है।

इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान को अग्रांकित चरणों एवं संकल्पों की सिद्धि हेतु किए जाने वाले अध्ययन को स्वीकार कर वैज्ञानिक रीतियों के सापेक्ष क्रियान्यवयन उचित होगा –

- समस्या चयन, उपकल्पना, संकल्पना या परिकल्पना का निर्माण, तथ्यों का निर्धारित उद्देश्यों के सन्दर्भ में सम्बन्धित जनसंख्या से संग्रहण, विवेचन तथा प्राप्त तथ्यों के आधार पर उपयुक्त बिन्दु एवं स्थान पर क्रियात्मक पक्ष में परिवर्तन एवं परिणामों का मूल्यांकन व पुनर्मूल्यांकन जैसे पदों का पालन करते हुए अध्ययन की योजना प्रारूपित किया जा सकता है।
- क्रियात्मक अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्यों को इस प्रकार निर्धारित किया जा सकता है –यथा विद्यार्थियों में शिक्षकों द्वारा राष्ट्रीय संवैधानिक प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना हेतु गुणों का विकास करने के लिए शिक्षण के दौरान कक्षाओं में समानता के लिए स्थापित भारतीय संविधान के अनुच्छेद – 14, 15 एवं 16 के प्रावधानों के अनुरूप आचरण उत्पन्न एवं अनुपालन को प्रेरित करना; के संकल्प सिद्धि हेतु विद्यार्थियों को कक्षा में बैठने के लिए सीटों को निश्चित न करना, परन्तु यदि कोई विद्यार्थी निकट–दृष्टि दोष की समस्या से ग्रसित है तो उसके लिए आगें की सीटों को देने के लिए विद्यार्थियों में सकारात्मक, सहयोगात्मक भाव उत्पन्न करना, जैसे कार्य के माध्यम से प्रस्तुत मूल्यों को स्थापित करने का अनुप्रयोग।
- विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार एवं विकास के लिए सभी सक्षम हितधारियों को शैक्षिक नियोजन में सम्मिलित करते हुए उनकी भूमिका का बिना किसी दबाव के सहमति से निर्धारण करना।
- विद्यालय के समस्त पक्षों यथा – शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धन एवं निरीक्षकों में आधुनातन वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना तथा उनमें ऐसी कार्य संस्कृति, कार्य कौशल एवं कुशलता का सम्यक विकास करना, जिससे विद्यालय की कार्य प्रणाली में अपेक्षित सुधार, परिवर्तन एवं परिमार्जन सम्भव हो सके और उक्त गतिविधियां विद्यार्थियों हेतु अनुकरणीय भी बन जाए।
- विद्यालय में पूर्व से चली आ रही यन्त्रवत् रूढ़िवादी वातावरण में उपयुक्त परिवर्तन करते हुए आकर्षक बनाना, जिससे जड़ता के दोष से मुक्त होकर विद्यार्थी हेतु प्रेरक परिस्थितियां उत्पन्न हो सकें।
- विद्यालय की कार्य प्रणाली में सुधार करते हुए शैक्षिक निष्पत्ति के साथ विद्यार्थी के चतुमुर्खी विकास के लक्ष्यकोउत्पन्न करने के लिए आवश्यक अध्ययन करना।

उक्त प्रस्तुत उद्देश्यों, लक्ष्यों की सम्प्राप्ति हेतु क्रियात्मक अनुसंधान के अग्रांकित परिक्षेत्रों में हस्तक्षेप करते हुए प्रयोगात्मक प्रयास कर निम्नलिखित लाभ प्राप्त किया जा सकता है –

- कक्षा शिक्षण की विधियों, युक्तियों में सुधार लाने के लिए छात्रों की अभिरुचि, ध्यान, एकाग्रता, तत्परता, जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए शिक्षण सामग्रियों को युक्ति–युक्त व उपयोगितापरक बनाया जा सकता है।
- भाषा की न्यूनता एवं अंकगणितीय समझ को अभिव्यक्ति में सुधार और भावी मूल्यांकन में तथ्यों को लिखने के मार्ग में उत्पन्न बाधा का निवारण करने के लिए वाचन की समस्या,

वर्तनी का ज्ञान एवं अवबोध तथा संख्यात्मक समस्या से उत्पन्न समस्या जोड़–घटाना, गुणा–भाग, प्रतिशत जैसे बिन्दुओं के परीक्षण हेतु गृहकार्य देकर क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा समस्याओं के मूल कारणों तक पहुँचा जा सकता है।

- छात्रों की अनुपस्थिति एवं विद्यालय में देर से पहुँचने अथवा बीच में ही विद्यालय से भाग जाने के सन्दर्भ में प्रस्तुत अनुसंधान की विधा का प्रयोग करते हुए निदानात्मक आवश्यक अवबोध के साथ परिवर्तन करते हुए लाभ प्राप्त किया जा सकता है।
- शिक्षण, सम्प्रेषण सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण हेतु प्रस्तुत शोध प्रविधि शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है। इसी प्रकार सभी हितधारियों के मध्य संवाद, विचारों का आदान–प्रदान को एक उपयुक्त समाधान के रूप में देखा गया है जिसे क्रियात्मक अनुसंधान के परिक्षेत्र में सम्मिलित करते हुए और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- विद्यालय के संगठन एवं प्रशासन से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के सन्दर्भ में तथ्यपूर्ण व्यावहारिक बिन्दुओं को अध्ययन का केन्द्रीय बिन्दु निर्धारित कर प्रयोग सम्भव है जिसके सकारात्मक परिणाम अवश्य होंगे।
- विद्यालय की समस्याओं को व्यावहारिकता, आधुनिकता एवं समय सापेक्ष सन्दर्भो में रखकर प्रारूपित क्रियात्मक अध्ययन करते हुए क्रियात्मक अनुसंधान का लाभ लिया जाना सम्भव हो सकता है।
- क्रियात्मक अनुसंधान से शिक्षकों में समस्याओं के प्रति असहाय होने का चिन्तन समाप्त होगा और उनमें समस्याओं को जानने, पहचानने, समझने एवं समाधान हेतु एक नवीन शोधपरक दृष्टि निर्मित होगी; जो शिक्षा में गुणात्मक अभिवृद्धि का कारक सिद्ध होगा। जो क्रमशः विद्यालयी शिक्षण एवं प्रशासन दोनों केन्द्रीय कार्यो में अपेक्षित सुधार हेतु प्रभावी सम्भव तथ्य होगा।

विद्यालय से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा अपनी और विद्यालय की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करते हुए अपनी सेवाओं और विद्यालय की गतिविधियों में सुधार हेतु क्रियात्मक अनुसंधान नामक अपनी पुस्तक में प्रो0 के. जी. पाण्डेय कहते हैं कि 'शिक्षण संस्थाओं और शैक्षणिक अनुसंधानकर्ताओं के बीच एक ऐसी खाई सी बन गयी है जिसे पाटना प्रजातन्त्र की रक्षा हेतु नितान्त आवश्यक बन गया है', जो क्रियात्मक अनुसंधान के शैक्षिक एवं राष्ट्रीय लक्ष्यों की सिद्धि में भूमिका व महत्व को उद्घाटित करता है। इस सन्दर्भ एवं दृष्टि में यह कहना और मानना उचित होगा कि क्रियात्मक अनुसंधान वर्तमान शिक्षा का भविष्य है। क्योंकि प्रजातांत्रिक मूल्यों को आचरण में स्वीकारोक्ति के साथ ढालना वर्तमान शान्तिपूर्ण विश्व की अपरिहार्य मानवीय आवश्यकता है।

अध्ययन महत्ता –

क्रियात्मक अनुसंधान का लक्ष्य शिक्षा की मौलिक समस्याओं का अध्ययन करते हुए नवीन तथ्यों की खोज द्वारा जीवन के सत्य को स्थापित करते हुए सोद्देश्य प्रक्रिया से है जो शिक्षा का केन्द्रीय बिन्दु है। किसी भी स्तर पर उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु यन्त्रवत्, जड़वत व्यवस्था को सुरुचिपूर्ण, आकर्षक व समाधानात्मक बनाना ही क्रियात्मक अनुसंधान का लक्ष्य है। इस प्रक्रिया की जानकारी एवं अनुपालन न होने से शिक्षण में उत्पन्न स्थानीयता के दोष का निराकरण भी नहीं हो पाता है, परिणामतः अनेकानेक समस्याऐं यथा – निम्न निष्पत्ति, विद्यालय में न्यूनतम उपस्थिति, पढ़ाई में आकर्षण हीनता के कारण अध्ययन छोड़ने जैसे विभिन्न आयामों से सम्बन्धित समस्याऐं जो उत्पन्न होती हैं उसका समाधान सम्भव नहीं हो पाता है। क्रियात्मक अनुसंधान इन सभी समस्याओं के सन्दर्भ में किया गया उपचारात्मक एवं समाधानात्मक अध्ययन होने से उक्त सन्दर्भो में प्रभावी सहयोगी कारक एवं विधा सिद्ध होता है जो शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षा से जुड़े शासन–प्रशासन के लोग, नीति निर्माताओं एवं

अन्य हितधारियों हेतु पथ–प्रदर्शक की भूमिका सम्पादन में सहायता प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूची–

1. बाली, डी आर (1989) इंट्रोडक्शन टू फिलोसोफी, स्टर्लिंग पब्लिशर प्राइवेट लिमटेड.
2. बनर्जी, जे.पी. (1989). एजुकेशन इन इंडिया, पास्ट, प्रेजेंट, फ्यूचर
3. राव, कामेश;(2001) क्रियात्मक अनुसंधान
4. पाण्डेय, के0पी0; शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, ई–बुक
5. ब्लूम, शैक्षिक उद्देश्य– ज्ञानात्मकए भावात्मक, क्रियात्मक पक्ष, फ्राम ब्लूम टेक्सोनामी